17 दिसम्बर 2018, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 41, अंक : 18 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
दिसम्बर (द्वितीय), 2018 (वीर नि.संवत्-2545) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

अहमदाबाद में पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

अहमदाबाद (गुज.) : यहाँ वस्त्रापुर स्थित अहमदाबाद एज्यूकेशन सोसायटी ग्राउन्ड में श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन परमागम मंदिर चेरिटेबल ट्रस्ट, वस्त्रापुर द्वारा आयोजित श्री 1008 शान्तिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव शुक्रवार, दिनांक 7 दिस. से बुधवार 12 दिस. तक अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के साथ अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के धर्मध्यान के चार भेद, तप कल्याणक व आहारदान विषय पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त पण्डित वीरेन्द्रजी आगरा, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया, पण्डित शैलेषभाई शाह वस्त्रापुर, पण्डित चेतनभाई मेहता राजकोट आदि विद्वानों का समागम प्राप्त हुआ।

महोत्सव ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के प्रतिष्ठाचार्यत्व, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन के मंच संचालन एवं पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर के निर्देशन में संपन्न हुआ।

बालक शांतिनाथ के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती निपुणाबेन-सुरेशभाई शाह को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री निखिलभाई-नेहाबेन गांधी, कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी श्री चिरेनभाई-कुंजलबेन शाह एवं यज्ञनायक-नायिका श्री परेशभाई-शिल्पाबेन कोठारी थे। प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री सेवंतीलाल अमृतलाल गांधी परिवार ने किया।

दिनांक 9 दिसम्बर को बाल तीर्थंकर का सौधर्मादि इन्द्रों के पश्चात् सर्वप्रथम अभिषेक करने का सौभाग्य श्री जयंतीलाल कचरालाल शाह परिवार और शारदाबेन शांतिलाल शाह परिवार को मिला। सायंकाल 40 फीट का कांच से बना विशाल पालना दर्शनीय रहा, जिसका उद्घाटन एवं सर्वप्रथम आहारदान श्री शारदाबेन शांतिलाल शाह परिवार ने किया।

विधिनायक भगवान शांतिनाथ के भेंट व विराजमानकर्ता श्री राजेशभाई नानुभाई झवेरी तथा रसिकलाल जगजीवनदास शाह थे। इस पंचकल्याणक में अत्यंत सुन्दर मंदिर में निर्मित आकर्षक पंचमेरु में 80 प्रतिमाएं विराजमान की गईं। साथ ही गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने जिनका स्वाध्याय किया - ऐसे 37 ग्रंथों को एक साथ देखा जा सके, इस प्रकार से विराजमान किया गया।

संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, आध्यात्मिक गोष्ठियों, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत '**अध्यात्मयोगी राम**' नामक नाटक का मंचन किया गया। संपूर्ण कार्यक्रम में लगभग 5-6 हजार साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। महोत्सव में सत्साहित्य व सैंकड़ों सी.डी./डी.वी.डी. घर-घर पहुंची।

पंचकल्याणक महोत्सव का सफल संचालन ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री रमेशचन्द्र वाडीलाल शाह ने किया। साथ ही समिति के समस्त पदाधिकारियों और अनेक नगरों के मुमुक्षु मण्डल व युवा फैडरेशन के सदस्यों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। ●

गुजरात के टी.वी. चैनल पर डॉ. भारिल्ल...

अहमदाबाद-वस्त्रापुर में हुए पंचकल्याणक के दौरान दिनांक 10 दिसम्बर को एक गुजराती टी.वी. चैनल द्वारा अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** का इंटरव्यू लिया गया, जिसमें उन्होंने जैनधर्म के प्रमुख सिद्धांत '**अहिंसा**' के बारे में विस्तार से चर्चा की।

ध्वनि पटेल द्वारा लिये गये इस विशेष इन्टरव्यू का प्रसारण देशभर में किया गया। डॉ. भारिल्ल ने पंचकल्याण के स्वरूप, क्रमबद्धपर्याय तथा जैनतत्त्वज्ञान जैसे विषयों पर तो अपने विचार रखे ही, आपने आज की राजनीतिक समस्या राममंदिर के संबंध में भी अपने विचार खुलकर रखे, आपने इन्टरव्यू के माध्यम से कानजीस्वामी के योगदान की चर्चा की। इस इन्टरव्यू को यू-ट्यूब के **ptst jaipur** पर भी देखा जा सकता है।

डॉ. भारिल्ल सोनगढ में...

अहमदाबाद के पंचकल्याणक के पश्चात् **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** दिनांक 9 दिसम्बर को आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की कर्मस्थली सोनगढ पधारे। यहाँ आपका बैंड बाजे के साथ पदार्पण हुआ और विद्यार्थी गृह के विद्यार्थियों द्वारा भावभीना अभिनन्दन किया गया। पण्डित सोनूजी शास्त्री ने अपने गुरुजी का आत्मीय सम्मान किया। स्मरण रहे कि आप लम्बे समय के पश्चात् पश्चिम भारत में स्थापित होने वाली भगवान बाहुबली की विशाल प्रतिमा के दर्शनार्थ सोनगढ पधारे थे। आपने श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई द्वारा संचालित विद्यालय का निरीक्षण किया तथा विद्यार्थियों के मध्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के महती योगदान की चर्चा करते हुए विद्यार्थियों को अध्ययनार्थ टोडरमल स्मारक में आने की प्रेरणा दी।

सम्पादकीय –

ऐसे क्या पाप किये? 19

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

अड़तालीस ताले टूटने की कथा दिगम्बाराचार्यों की मान्यता नहीं है। ये किसी अन्य की मनगढंत कल्पित कथा है।

(५) दिगम्बरों के मतानुसार –''ग्यारहवीं सदी (लगभग १०२५ ई.) के दिगम्बराचार्य महापण्डित प्रभाचन्द्राचार्य ने 'क्रियाकलाप' ग्रन्थ की अपनी टीका की उत्थानिका में लिखा है कि मानतुङ्ग नामक श्वेताम्बर महाकवि को एक दिगम्बराचार्य ने महाव्याधि से मुक्त कर दिया तो उसने दिगम्बर मार्ग ग्रहण कर लिया और पूछा कि भगवन! अब मैं क्या करूँ? तब आचार्य ने आदेश दिया कि परमात्मा के गुणों को गूँथकर स्तोत्र बनाओ। फलत: मानतुङ्ग मुनि ने इस भक्तामर स्तोत्र की रचना की।[१]''

भक्तामर स्तोत्र में जिनेन्द्र भगवान के रूप–सौन्दर्य का, उनके अतिशयों और प्रतिहार्यों का तथा उनके नाम–स्मरण के माहात्म्य से स्वत: निवारित भयों एवं उपद्रवों का अच्छा संतुलित वर्णन किया गया है। इसमें अनावश्यक पाण्डित्य प्रदर्शन से स्तोत्र को बोझिल नहीं होने दिया गया है और न ही समन्तभद्र की तरह तार्किकता एवं दार्शनिकता भी इसमें है। यद्यपि दार्शनिकता व तार्किकता के कारण समन्तभद्राचार्य के स्तोत्र उच्चकोटि के शास्त्र बन गये हैं; परन्तु वे दार्शनिकता के कारण भक्तामर की तरह प्रतिदिन पाठ करने के लिए जन–जन के विषय नहीं बन पाये। आचार्य समन्तभद्र की तार्किक बुद्धि और दार्शनिक चिन्तन उनके हृदयपक्ष पर हावी रहा, परन्तु इससे उनके स्तोत्रसाहित्य में भी यह विशेषता रही कि भावुकतावश होनेवाले कर्तृत्वादि के आरोपित कथन उनके स्तोत्रों में नहीं आने पाये।

देवागमस्तोत्र, स्वयंभूस्तोत्र, एकीभावस्तोत्र एवं कल्याण–मंदिर स्तोत्र की भाँति ई इस स्तोत्र का नाम भी प्रथम छन्द के प्रथम पद के आधार पर ही प्रचलित हुआ है। इसका दूसरा नाम आदिनाथ स्तोत्र या ऋषभस्तोत्र भी है। दूसरे नाम के संदर्भ में विचारणीय बात यह है कि मात्र 'प्रथमं जिनेन्द्रं' और 'युगादौ' पदों से ही यह 'आदिनाथ स्तोत्र' भी कहा जाता है।

''यदि 'प्रथमं जिनेन्द्रं' का अर्थ जिनेन्द्रों (अरहन्तों) में प्रमुख अर्थात् तीर्थंकरदेव कर लिया जाय तथा युगादौ का अर्थ यह युग प्रथम तीर्थंकर के जन्म से प्रारम्भ होता है, यह माना जाय तो यह सामान्यतया सभी तीर्थंकरों या जिनेन्द्रों की स्तुति है। वैसे भी स्तोत्र में कहीं भी किसी भी तीर्थंकर विशेष का नामादि परिचयसूचक कोई स्पष्ट संकेत नहीं है।''[१]

''भक्तामरस्तोत्र के काव्यों की संख्या में भी कुछ मतभेद हैं। केवल मन्दिर–मार्गी श्वेताम्बर जैन इस स्तोत्र की काव्य संख्या ४४ मानते हैं। शेष सभी दिगम्बर जैन, स्थानकवासी एवं तेरापंथी श्वेताम्बर आदि एक मत से ४८ काव्य ही मानते हैं। ४४ काव्यों के माननेवाले ३२ से ३५ तक चार काव्यों को नहीं मानते, इन्हें प्रक्षिप्त कहते हैं; परन्तु इससे उनके यहाँ चार प्रातिहार्यों का वर्णन छूट जाता है, जबकि श्वेताम्बर सम्प्रदाय में भी पूरे आठ प्रातिहार्य माने गये हैं।

कल्याणमन्दिर स्तोत्र में भी भक्तामर की तरह पूरे आठ प्रातिहार्यों का वर्णन है और उसे श्वेताम्बर सम्प्रदाय भी अविकलरूप से मानता है। तब फिर भक्तामर के उक्त चार काव्यों को क्यों नहीं मानता? सम्भव है, कल्याणमन्दिर स्तोत्र में ४४ ही काव्य हैं, अत: भक्तामर में भी ४४ ही होने चाहिए – इस विचार से ऐसा किया हो।''[२] अस्तु –

भक्तामरस्तोत्र के कर्ता मानतुङ्ग सूरि कौन थे, कब हुए ? ये विषय इतिहास की शोध खोज का विषय है। **ईसा की प्रथम शताब्दी से लेकर १३वीं शताब्दी तक १० मानतुङ्ग सूरि हुए हैं, उनमें भक्तामर स्तोत्र के कर्ता कौन थे – यह कह पाना कठिन है।**

इस स्तोत्र के कर्ता मानतुङ्ग कवि को कुछ इतिहासज्ञ विद्वानों ने हर्षवर्द्धन के समकालीन बताया है। चूँकि सम्राट हर्षवर्द्धन का समय ७वीं शती है, अत: मानतुङ्ग का समय भी ७वीं शताब्दी होना चाहिए।[३]

तथ्यों से पता चलता है कि भक्तामर के रचयिता मूलत: ब्राह्मण, धर्मानुयायी और कुकवि थे। बाद में अनेक परिवर्तनों

१. अनेकान्त अंक १९९६, पृष्ठ २४५

१. डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन : भक्तामर रहस्य की प्रस्तावना, पृष्ठ–२८
२. पं. रतनलाल कटारिया : जैन निबन्ध रत्नावली, पृष्ठ ३३८
३. वही, पृष्ठ–३३९

के बाद दिगम्बर जैन साधु हो गये थे। उन्हीं ने यह भक्तामर काव्य बनाया है।[१]''

''पाण्डे हेमराज कृत हिन्दी पद्यानुवाद तो सर्वाधिक प्राचीन, सर्वश्रेष्ठ व सरस रचना है ही, उन्होंने भक्तामर पर हिन्दी गद्य वचनिका (१६५२ ई.) भी लिखी थी तथा प्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पं. जयचन्दजी छाबड़ा (१८१३ ई.) ने भी 'भक्तामर चरित' लिखा है और भी पण्डित घनराज आदि के प्राचीन पद्यानुवाद मिलते हैं।[२]

उपसंहार – प्रस्तुत लेख के माध्यम से हमने संक्षेप में भक्तामर का माहात्म्य, जनसामान्य में इसकी लोकप्रियता के कारण, इसकी विषय–वस्तु, आगम के आलोक में भक्ति–स्तुति का स्वरूप, व्यवहार भक्ति में परमात्मा में कर्तापन के आरोप का औचित्य, भक्तामर स्तोत्र पर विविध प्रकार के साहित्य का सृजन, भक्तामर के रचयिता मानतुङ्ग, उनका समय, काव्यों की संख्या, स्तोत्र का नाम, भक्तामर पर युग का प्रभाव आदि विविध विषयों का सामान्य परिचय कराने का प्रयास किया है। विशेष जानकारी के लिए यथास्थान संदर्भित टिप्पणियाँ भी दी गई हैं।

सभी लोग इस ग्रन्थ के द्वारा भक्ति का यथार्थ स्वरूप समझकर भक्त, भक्ति और भगवान की त्रिमुखी प्रक्रिया को अपने जीवन में साकार करके सच्चा सुख प्राप्त करें – इस पवित्र भावना के साथ विराम। ॐ नमः।

जिनागम के आलोक में विश्व की कारण–कार्य व्यवस्था

जगत का प्रत्येक द्रव्य परिणमनशील है। द्रव्य के उस परिणमन को ही पर्याय या कार्य कहते हैं। कार्य बिना कारण के नहीं होता और एक कार्य के होने में अनेक कारण होते हैं। उनमें कुछ कारण तो नियामक होते हैं और कुछ आरोपित। आरोपित कारण मात्र कहने के कारण हैं, उनसे कार्य निष्पन्न नहीं होता। उनकी कार्य के निकट सन्निधि मात्र होती है। जिनवाणी में कारणों की मीमांसा निमित्त व उपादान के रूप में की गई है।

१. डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन : भक्तामर रहस्य की प्रभावना, पृष्ठ–३६
२. अगरचन्द नाहटा (श्रमण, सितम्बर १९७०)

पदार्थ की निज सहज शक्ति या मूल स्वभाव उपादान कारण है इसके तीन भेद होते हैं – १. त्रिकाली ध्रुव उपादान कारण २. अनन्तर पूर्व क्षणवर्ती–पर्याय युक्त द्रव्य एवं ३. तत्समय की योग्यता रूप क्षणिक उपादान। यह तीसरा कारण स्वयं कारण भी है और कार्य भी। ये कारण स्वयं कार्य के अनुरूप परिणमन करते हैं।

कार्य की उत्पत्ति के समय पर पदार्थों का जो परिणमन कार्य के अनुकूल होता है, उसे निमित्त कारण कहा जाता है। निमित्त कारण कार्योत्पत्ति में कुछ करते नहीं है। अतः इन्हें यथार्थ कारण नहीं माना जाता। आगम में इन्हें उपचरित या आरोपित कारण कहा जाता है। उदासीन व प्रेरक आदि सभी प्रकार के निमित्तकारण कार्योत्पत्ति में अकिंचित्कर ही हैं।

यहाँ कोई कह सकता है कि जब कोई भी निमित्त परद्रव्य या उसके परिणमन का किंचित् भी कर्त्ता नहीं है – सर्वथा अकिंचित्कर हैं तो फिर लोक इन्हें कर्त्ता क्यों कहता है ? कहता ही नहीं, मानता भी है। लोक को इनमें कर्त्तापने का भ्रम कहाँ से, क्यों और कैसे उत्पन्न होता है ?

निमित्तों में कर्त्तापने के भ्रम का मूल कारण यह है कि कार्योत्पत्ति के समय निमित्तों की अनिवार्यरूप से उपस्थिति–सन्निधि या सन्निकटता नियम से देखी जाती है। जब कोई कार्य होगा तो उसके निकट अनुकूल निमित्त अवश्य होंगे ही। अतः बार–बार ऐसा भ्रम हो जाता है कि ये संयोगी परपदार्थ भी सहायकरूप से कार्य के कर्त्ता अवश्य होने चाहिए, अन्यथा इनकी उपस्थिति का क्या औचित्य है ?

परन्तु वह उस समय इस बात को भूल जाता है कि कर्त्ता की परिभाषा तो आचार्यों ने यह कही है कि – ''**यः परिणमति सः कर्त्ता**'' अर्थात् जो स्वयं कार्यरूप परिणमन करता है, वह उस कार्य का कर्त्ता होता है। उपादान ही स्वयं कार्यरूप परिणमता है अतः वही वस्तुतः कार्य का कर्त्ता है।

कार्य के अनुकूल संयोगी परपदार्थों की कार्योत्पत्ति के समय अनिवार्यरूप से उपस्थिति होने से एवं कार्य के अनुकूल होने से उन्हें कारण संज्ञा प्राप्त तो है, किन्तु वे कार्य के अनुरूप स्वयं परिणमन नहीं करते अतः वस्तुतः वे कर्त्ता नहीं हो सकते। जैसे – घटरूप कार्य में मिट्टी ने ही स्वयं घटरूप परिणमन किया है, अतः कर्त्ता की उपर्युक्त परिभाषा के अनुसार

घट की कर्त्ता मिट्टी ही है, कुम्हार घट का कर्त्ता नहीं। हाँ, अनुकूल होने से कुम्हार, चक्र चीवर आदि को निमित्त कारण कहा जाता है।

एक ही समय में वही वस्तु जो पर के लिए निमित्त है, स्व के लिए उपादान भी है। निमित्त व उपादान कोई पृथक्–पृथक् सत्ताधारी पदार्थ नहीं है। वही कुम्हार का राग जो घट में निमित्त मात्र है, घट बनाने की इच्छारूप कार्य का उपादान भी है; क्योंकि वह राग परिणमन स्वयं इच्छारूप परिणमा है।

इसीप्रकार जीव अपने अज्ञान से सुख या दु:खरूप कार्य में स्वयं को निरभार परिणमता है अत: जीव ही अपने सुख–दु:ख का कर्त्ता है, कर्म का उदय नहीं। अन्य माता–पिता, गुरुजन, स्त्री–पुत्र, मित्र या शत्रु तथाा इन्द्रिय के विषयभूत पदार्थों ने भी स्वयं किसी के सुख या दु:खरूप परिमणन नहीं किया है। अत: ये सब भी किसी के सुख–दु:ख के कर्त्ता–हर्त्ता नहीं हो सकते। इनसे सुख–दु:ख मानना अज्ञान है और यही अज्ञान राग–द्वेष की उत्पत्ति का मूल है। राग–द्वेष का अभाव कर सुखी होना हो तो निमित्त–उपादान या वस्तु की कारण–कार्य व्यवस्था को समझना ही होगा। सुखी होने का अन्य कोई उपाय नहीं है।

यहाँ कोई कह सकता है कि जीवों में परस्पर उपकार देखा जाता है। माता–पिता, गुरुजन तथा देव–शास्त्र–गुरु, दयालु पुरुष, इष्टमित्र निरन्तर भलाई चाहते हैं, उपकार करते हैं, उसे न मानना क्या यह कृतघ्नता नहीं होगी? यद्यपि आपका यह कहना सच है कि मित्र–शत्रु आदि निमित्तों को उपकारी–अनुपकारी मानने से राग–द्वेष की उत्पत्ति ही होती है, तथापि करें क्या ऐसा न मानने से तो सारा लोक व्यवहार ही बिगड़ जायगा और कृतज्ञता का भाव भी नहीं रह पायगा, इसका क्या होगा?

यह कोई समस्या नहीं है। यदि हमें निमित्त–उपादान, वस्तु की कारण–कार्य व्यवस्था तथा कर्त्ता–कर्म का सही स्वरूप समझ में आ जाय, इनकी यथार्थ प्रतीति हो जाय तो हम समताभाव को प्राप्त कर सच्ची शान्ति व सुख तो प्राप्त करेंगे ही। साथ ही जबतक जगत में है, तबतक जगत का व्यवहार और कृतज्ञता का भाव और भी अच्छे रूप में आयेगा–ऐसा ही वस्तु का स्वरूप है। देखो! जिस तरह इष्ट मित्र या परिजनों के चिर–वियोग हो जाने पर सभी को पूर्ण विश्वास है कि दिवंगत जीव हमारे रोने–बिलखने से जीवित नहीं होगा। और रोना आर्तध्यानरूप खोटा परिणाम है, असाता कर्म के बंध का कारण है; तथापि रोना आता ही है तथा जिस कन्या की शादी करने में विवाह आयोजन और दहेज आदि खर्च में सर्वस्व लुटा दिया हो, दिन–रात एक कर दिया हो, सगाई होते ही निर्भार हो गया हो, उस कन्या की विदा के समय भी रोना आये बिना नहीं रहता। रोना आ ही जाता है। राग का ऐसा ही विचित्र प्रकार है अतः न तो कृतज्ञता का ही लोप होगा और न लोकव्यवहार ही बिगड़ेगा। हाँ, जैसे–जैसे चारित्र में वृद्धि होती है नीचे का व्यवहार छूटता जाता है और भूमिकानुसार ऊपर का व्यवहार आता जाता है। पूर्ण–वीतराग दशा में भी जब तीर्थंकरों का भी हितोपदेशी होने का व्यवहार नहीं छूटता, और चार ज्ञान के धारी गणधर जैसे दिगम्बर मुनिराज के भी यथायोग्य व्यवहार होता है तो तेरा व्यवहार कैसे छूट जायगा?

यह तो ठीक है, किन्तु क्या प्रेरक–निमित्त भी कुछ नहीं करते? यदि नहीं, तो फिर इनका नाम प्रेरक निमित्त क्यों रखा गया?

धर्म, अधर्म, आकाश व काल द्रव्य, इच्छा शक्ति से रहित अचेतन व निष्क्रिय होने से उदासीन निमित्त कहलाते हैं और जीवद्रव्य इच्छावान व क्रियावान होने से एवं पुद्गल द्रव्य केवल क्रियावान होने से प्रेरक निमित्त कहलाते हैं, किन्तु कार्योत्पत्ति में सभी परद्रव्य धर्मास्तिकाय की तरह उदासीन ही होते हैं। जैसे वर का सहचारी होने से नाई भी बराती कहा जाता है; वैसे ही कार्य के सहचारी होने से निमित्तों को भी कारण कहा जाता है, किन्तु ये वास्तविक कारण नहीं है।

निमित्तों को निमित्त के रूप में तो सभी ज्ञानियों ने स्वीकार किया है; किन्तु उनको कर्त्ता के रूप में किसी ने नहीं माना। निमित्तों को कर्त्ता निमित्त स्वयं नहीं मानते। समयसारादि ग्रन्थों के समर्थ टीकाकार आचार्य अमृतचन्द जैसे ज्ञानी पुरुष स्वयं को टीका का निमित्त तो मानते हैं, किन्तु कर्त्ता नहीं। वे स्वयं कहते हैं :– ''मुझे इस टीका का कर्त्ता कहकर मोह में मत नाचो तथा जड़–शास्त्रों का कर्त्ता कहकर जड़ की उपाधि मत दो, क्योंकि जड़ का कर्त्ता जड़ ही होता है।''

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी ने भी यही लिखा है –

''वचनादिक लिखनादिक क्रिया, वर्णादिक अरु इन्द्रिय हिया।
ये सब हैं पुद्गल के खेल, इनसों नाहिं हमारो मेल।।''

पण्डित बनारसीदासजी के विचार भी दृष्टव्य हैं। वे कहते हैं–

''एक कारज के कर्त्ता न दरब दोय।
दो कारज एक–द्रव्य न करतु है।।''

अर्थात् एक कार्य के दो द्रव्य मिलकर कर्त्ता नहीं होते तथा एक द्रव्य एक साथ दो कार्य नहीं कर सकता। ऐसा नहीं होता कि अपना कार्य भी करता रहे और दूसरे द्रव्य का भी कर्त्ता बन जाय।

यहाँ कोई प्रश्न कर सकता है कि एक साथ न सही, आगे–पीछे तो परद्रव्य का कार्य कर सकेगा या नहीं?

नहीं, यह भी संभव नहीं है; क्योंकि कोई भी द्रव्य कभी भी खाली नहीं है। प्रत्येक द्रव्य प्रतिसमय अपना परिणमनरूप कार्य करता ही रहता है। अतः परद्रव्यरूप परिणमन करके अन्य का कर्त्ता बनने का उसे अवकाश ही नहीं है तथा परद्रव्यरूप परिणमन करने की उसमें सामर्थ्य भी नहीं है। परद्रव्य अपने में इतना परिपूर्ण है कि उसे परद्रव्य के सहयोग की जरूरत या अपेक्षा ही नहीं है, एवं उसमें परद्रव्य से सहयोग लेने की क्षमता भी नहीं है। अतः एक द्रव्य को दूसरे द्रव्य का कर्त्ता मानना संभव नहीं है।

प्रश्न – इस तरह से तो 'कृतज्ञता' और 'उपकार' शब्द निरर्थक ही सिद्ध हो जायेंगे?

उत्तर – नहीं, वे शब्द निरर्थक नहीं है; उनका अर्थ तो अपनी जगह बराबर है, वे पूर्ण सार्थक हैं, किन्तु उनके धर्म समझाने में हम ही कहीं चूक रहे हैं, लोक में 'उपकार' का अर्थ जो भलाई माना गया है, वह अपनी जगह ठीक हो सकता है; परन्तु मोक्षमार्ग के संदर्भ में उपकार का अर्थ इससे भिन्न है। शब्दों के अनेक अर्थ होते हैं, उन्हें प्रकरण के अनुसार समझना होगा। तत्त्वार्थसूत्र जैसे सर्वमान्य आगम ग्रन्थ में 'उपकार' का अर्थ निमित्त किया गया है। तत्त्वार्थसूत्र के पाँचवें अध्याय में धर्म, अधर्म, आकाश, काल एवं जीवद्रव्य के परस्पर उपकार बताते हुए गति, स्थिति, अवगाहन, परिणमन हेतुता अर्थात् निमित्तपना बताया है तथा 'जीव' और पुद्गल के उपकारों में भी शरीर, वचन, मन, सुख, दुःख, जीवन–मरण रूप उपकार बताये हैं। यहाँ उपकार का अर्थ निमित्त मानने में सबसे प्रबल हेतु यह है कि दुःख और मरण भलाई कैसे माने जा सकते हैं। तथा धर्म, अधर्मादि द्रव्यों में तो ज्ञान ही नहीं है, वे भलाई कैसे करेंगे। और निमित्तपना या हेतुता तो सब में समानरूप से है ही। सर्वार्थसिद्धि में भी निमित्त का अर्थ हेतुता ही किया गया है। **(क्रमशः)**

वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ हिरणमगरी सेक्टर 3 नेमिनाथ जैन कॉलोनी स्थित श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में दिनांक 30 नवम्बर से 2 दिसम्बर तक भव्य मानस्तम्भ वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा आत्मानुभूति विषय पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला।

कार्यक्रम में उदयपुर, जयपुर, कोटा, जबलपुर, कुरावड, साकरोदा, शिशवी, भिण्डर, कानोड, जगत, वल्लभनगर, डबोक, लकडवास, सेमारी, कल्याणपुर आदि स्थानों से लगभग 2500 साधर्मियों ने लाभ लिया।

विधि–विधान के समस्त कार्य ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री देवलाली के निर्देशन में पण्डित अश्विनजी शास्त्री नौगामा, पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर द्वारा संपन्न हुये। संपूर्ण कार्यक्रम के निर्देशक व संयोजक डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री रहे।

दिनांक 2 दिसम्बर को शाश्वतधाम में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की अध्यक्षता में क्रमबद्धपर्याय विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, डॉ. पारसमलजी अग्रवाल, पण्डित तपिशजी शास्त्री, कु. समयसत्य प्रधान, कु. मुक्ति जैन ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। गोष्ठी का संचालन पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने किया। दिनांक 3 दिसम्बर को श्री आदिनाथ मंडल विधान का आयोजन हुआ। साथ ही पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित विपिनजी शास्त्री के प्रवचनों का एवं डॉ. बासन्ती बेन की कक्षाओं का भी लाभ मिला।

शोक समाचार

(1) हेरले–कोल्हापुर (महा.) निवासी श्री शांतिनाथजी खोत का दिनांक 9 दिसम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थे, जयपुर शिविर में पधारकर तत्त्वज्ञान का लाभ लिया करते थे। सर्वोदय स्वाध्याय समिति के अध्यक्ष के रूप में आप दक्षिण प्रांत में तत्त्वज्ञान के प्रचार–प्रसार की गतिविधियों में सक्रिय थे। हेरले–कोल्हापुर (महा.) में बन रहे उस क्षेत्र के एकमात्र मुमुक्षु संकुल 'सर्वोदय तीर्थ' के होने वाले पंचकल्याणक में भी आपका महत्वपूर्ण योगदान था। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थी सम्मेद खोत के पिताजी थे।

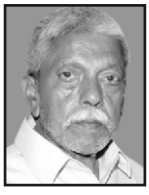

(2) श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महा. के स्नातक श्री संजयजी शास्त्री जयपुर (बड़ामलहरा वाले) के पिताजी **श्री शंभूकुमारजी जैन** का दिनांक 22 नवम्बर को 68 वर्ष की आयु में हृदयगति रुकने से देहावसान हो गया।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दुःखों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों – यही मंगल भावना है।

खुशखबरी ! प्रवेश हेतु अवसर!!

श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट गिरधरपुरा कोटा में स्थित परिसर में
प्रेमचंद जैन बजाज चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

आचार्य समन्तभद्र विद्यानिकेतन

आचार्य समन्तभद्र

द्वितीय सत्र हेतु प्रवेश प्रारम्भ

मुमुक्षु आश्रम, कोटा

(सत्रारम्भ – सोमवार, 1 अप्रैल 2019)

आप सभी को सूचित करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि मुमुक्षु आश्रम कोटा स्थित **आचार्य समन्तभद्र विद्यानिकेतन** अपना प्रथम सत्र पूर्ण कर चुका है, जिसमें वर्तमान में 6 प्रांतों के 31 छात्र अध्ययन कर रहे हैं। विद्यानिकेतन का द्वितीय सत्र सोमवार, 1 अप्रैल 2019 से प्रारम्भ हो रहा है, जिसमें कक्षा 8 में 21 छात्रों हेतु प्रवेश फार्म आमंत्रित है।

विद्यानिकेतन की मुख्य विशेषताएं

- अंग्रेजी माध्यम द्वारा सी.बी.एस.ई. के उच्च स्तरीय स्कूल में अध्ययन।
- लौकिक शिक्षण के साथ धार्मिक अध्ययन व चारित्रिक निर्माण का सुनहरा अवसर।
- **7वीं कक्षा में 90% से अधिक अंक सहित प्रवेश लेने वाले छात्रों को स्कूल फीस में 50% की छात्रवृत्ति।**
- **80% अंक से 10वीं उत्तीर्ण करने पर एवं शास्त्री महाविद्यालय में प्रवेश लेने वाले छात्रों को 8वीं, 9वीं एवं 10वीं – तीनों वर्षों की पूरी स्कूल फीस उच्च अध्ययन हेतु छात्रवृत्ति के रूप में वापस।**
- सर्वसुविधायुक्त (लैट–बाथ अटैच) नवीन आवासीय परिसर।
- आवास, भोजन व बस आदि की उच्चस्तरीय सम्पूर्ण नि:शुल्क व्यवस्था।
- प्रतिवर्ष 21 छात्रों को प्रवेश।

नोट :– प्रवेश फार्म 1 दिसम्बर से उपलब्ध होंगे, जिन्हें आप www.mumukshuaashram.com से भी डाउनलोड कर सकते हैं। प्रवेश प्रक्रिया मार्च में संपन्न की जायेगी।

संपर्क सूत्र :– धर्मेन्द्र शास्त्री (प्राचार्य) 9785643203 (w), अभिनय शास्त्री 7737979912, पीयूष शास्त्री 9039290981; **E-mail : dharm1008@rediffmail.com**

प्रवेश फार्म मंगाने हेतु संपर्क

बजाज पैलेस, पालीवाल कम्पाउण्ड, नगर परिषद कॉलोनी, छावनी, कोटा 324007 (राज.)

यही है ध्यान... यही है योग...

– डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

(दोहा)

अपनेपन के साथ ही निज आतम का ज्ञान।
रमो जमो बस यही है निज आतम का ध्यान।। १।।

(रेखता)

अरे निज आतम को पहिचान आतमा में अपनापन करें।
अरे अपने आतम को जान उसी में अपनेपन से जमे।।
यही है निश्चय सम्यग्दर्श यही है निश्चय सम्यग्ज्ञान।
रतन त्रय शामिल हो जाते करो यदि इक आतम का ध्यान।।२।।

काय चेष्टा कुछ भी मत करो और कुछ भी ना बोलो बोल।
और ना कुछ भी सोचो भाई! एक आतम में रमो अमोल।।
यही है निश्चय सम्यग्ज्ञान यही है निश्चय सम्यक् ध्यान।
यही है परम शुद्ध उपयोग यही है अद्भुत कार्य महान॥३।।

यही है परम समाधीयोग यही है परमतत्व की लब्धि।
यही है आतम की संवित्ति यही है आतम की उपलब्धि।।
यही है परम भक्ति का भाव यही है निर्विकल्प आनन्द।
यही है परम समरसीभाव यही है परमशुद्ध आनन्द।।४।।

यही है परम शुद्धचारित्र यही है स्वसंवेदन ज्ञान।
यही है स्वस्वरूप उपलब्धि यही है परमशुद्ध विज्ञान।।
यही है दिव्यध्वनि का सार यही है परमतत्त्व का बोध।
जगत में इसके बिन कुछ नहीं यही एकाग्र चित्त का रोध।।५।।

यही एकाग्रचित्त का रोध यही है अपनेपन का बोध।
यही है उपयोगी उपयोग यही है योगिजनों का योग।।
इसी को कहते हैं सब लोग मिला है यह अद्भुत संयोग।
स्वयं को जानो मानो जमो यही है परमतत्त्व का बोध।।६।।

स्वयं को जानो, जानो नहीं जानना होने दो तुम सहज।
जानने का तनाव मत करो जानते रहो निरन्तर सहज।।
अरे करने-धरने का बोझ उतारो हो जावो तुम सहज।
जानने के तनाव से रहित जानना होने दो तुम सहज।।७।।

जानना होने दो तुम सहज जानने के विकल्प से पार।
और तुम हो जावो निर्भार भाड़ में जानो दो तुम भार।।
भाड़ में जाने दो तुम भार करो तुम अपने में निर्धार[१]।
यदि बनना चाहो भगवान उन्हीं-से हो जावो निर्भार।।८।।

उन्हीं-से[२] हो जावो निर्भार उन्हीं-से हो जावो निर्ग्रन्थ।
चाहते हो तुम भव का अंत शीघ्र ही छोड़ो जग का पंथ।।
सहजता जीवन का आनन्द यही है परमागम का पंथ।
चलो तुम परमागम के पंथ शीघ्र आवेगा भव का अंत।।९।।

शीघ्र आवेगा भव का अन्त प्रगट होगा आनन्द अनन्त।
ज्ञान-दर्शन भी होंगे नंत वीर्य भी होगा अरे अनन्त।।
अनन्तानन्द अनन्तानन्द अनन्तानन्द अनन्तानन्द।
अनन्तानन्द अनन्तानन्द अरे भोगोगे काल अनन्त।।१०।।

(दोहा)

महिमा आतमध्यान की जिसका आर न पार।
आतम आतम में रमे हो जावे भव पार।। ११ ।।

(द्रव्यसंग्रह महामण्डल विधान की जयमाला पृष्ठ ४० से साभार...)

१. सोच समझकर निश्चित करना। २. उनके समान ही।

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय की –

साप्ताहिक गाष्ठियाँ संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा आयोजित गोष्ठियों के क्रम में दिनांक 30 नवम्बर को '**जैनेतर दर्शन : एक मीमांसा**' विषय पर गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसकी अध्यक्षता डॉ. नरेन्द्रजी शास्त्री जयपुर ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में आकाश हलाज उगार (शास्त्री द्वितीय वर्ष), देवांश जैन अमरमऊ (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण अमन जैन ग्वालियर (उपाध्याय कनिष्ठ) ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के प्रतीक जैन विदिशा व अमन जैन दिल्ली ने किया। आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने एवं ग्रंथ भेंट गौरवजी उखलकर ने किया।

दिनांक 5 दिसम्बर को '**निमित्त-उपादान : एक अनुशीलन**' विषय पर उपाध्याय वर्ग की गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसकी अध्यक्षता पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में स्वानुभव जैन खनियांधाना (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं शाश्वत जैन भोपाल (उपाध्याय वरिष्ठ) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण सौरभ कालेगोरे (उपाध्याय कनिष्ठ) ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के रजत जैन कापरेन व प्रशांत जैन ललितपुर ने किया।

17 दिसम्बर 2018, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

गुरुदेवश्री का स्मृति दिवस मनाया

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 29 नवम्बर को आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी का स्मृति दिवस मनाया गया।

इस अवसर पर तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य', पण्डित रमेशजी शास्त्री 'दाऊ', पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित प्रमोदजी शास्त्री, श्री कैलाशचंदजी सेठी, श्रीमती कमला भारिल्ल आदि महानुभाव मंचासीन थे।

कार्यक्रम में डॉ. भारिल्ल ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मैंने हमेशा पूज्य गुरुदेवश्री की नीति **No reply is best reply** का ही अनुसरण किया है; किसी को जवाब देना आवश्यक नहीं समझा। विद्यार्थियों को विशेष रूप से संबोधित करते हुए कहा कि आप 1 हजार विद्वानों में मुझे गुरुदेवश्री नजर आते हैं; अत: आप सभी को वैसा ही कार्य करना है जैसा गुरुदेवश्री ने किया है।

तत्पश्चात् डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. संजीवजी गोधा एवं अच्युतकांतजी शास्त्री ने भी अपने विचार व्यक्त किये। छात्रों के अन्तर्गत अमन जैन दिल्ली व आप्तअनुशीलन जैन दमोह ने वक्तव्य प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त सोमिल जैन दलपतपुर, संयम जैन मड़देवरा, अंकुर जैन खड़ैरी, अनुभव जैन खनियांधाना ने कविता के रूप में अपने मनोभाव प्रस्तुत किये। कार्यक्रम के पूर्व 1 घंटे तक गुरुदेवश्री का समयसार की 17-18वीं गाथा पर वीडियो प्रवचन प्रसारित किया गया।

कार्यक्रम में महाविद्यालय के समस्त छात्रों के अतिरिक्त अनेक स्नातक एवं उनके परिजन भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम का मंगलाचरण शास्त्री प्रथम वर्ष के पल त्रिवेदी, गांधीनगर ने एवं संचालन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

19 से 24 दिसम्बर	गौरझामर	पंचकल्याणक
26 दिस.से 1 जन.2019	जयपुर	विदेशियों हेतु शिविर
16 से 21 जनवरी 2019	हेरले	पंचकल्याणक
22 से 24 फरवरी 2019	जयपुर	वार्षिकोत्सव

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ के छात्र ध्यान दें

पत्राचार पाठ्यक्रम की दिसम्बर 2018 के अंतिम सप्ताह में होने वाली द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षाओं के पाठ्यक्रम का विवरण निम्नानुसार है; परीक्षार्थी इसी के अनुसार तैयारी करें -

द्विवर्षीय विशारद परीक्षा की सैकेण्ड सेमेस्टर परीक्षा

प्रथम वर्ष - 1. वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग 2
2. वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग 3

द्वितीय वर्ष - 1. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 2
2. धर्म के दशलक्षण + भक्तामर स्तोत्र

त्रिवर्षीय सिद्धांत विशारद परीक्षा की सैकेण्ड सेमेस्टर परीक्षा

प्रथम वर्ष - 1. रत्नकरण्ड श्रावकाचार
2. रामकहानी + आप कुछ भी कहो

द्वितीय वर्ष - 1. मोक्षमार्गप्रकाशक पूर्वार्द्ध (1 से 5 अध्याय)
2. नयचक्र-पूर्वार्द्ध (निश्चय व्यवहार)
3. हरिवंशकथा + भ.महावीर और उनका सर्वोदय तीर्थ

तृतीय वर्ष - 1. मोक्षमार्गप्रकाशक उत्तरार्द्ध (6 से 9 अध्याय)
2. नयचक्र-उत्तरार्द्ध (द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक नय प्रकरण)
3. शलाका पुरुष (सम्पूर्ण)

नोट : सभी परीक्षार्थियों को उनके प्रश्नपत्र केन्द्र/उनके पते पर दिसम्बर के तृतीय सप्ताह तक डाक द्वारा भेज दिये जायेंगे। यदि 25 दिसम्बर तक भी पेपर न मिले तो जयपुर कार्यालय से संपर्क करें।

- नीशू शास्त्री (प्रबंधक) 7742364541

प्रकाशन तिथि : 13 दिसम्बर 2018

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा,** एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com